शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

पत्रकारिता में हिन्दी का स्वरूप

जयभीम बौद्ध (शोधार्थी)
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

पत्रकारिता एक ऐसा दर्पण है, जिसमें समाज की जनजीवन की विविध छवियों और रंग रेखाओं को स्पष्टतः उभरता हुआ देखा जा सकता है। पत्रकारिता एक ऐसी असाधारण वस्तु है, जिसमें अनेक प्रकार की शक्तियाँ सन्निहित हैं। पत्रकारिता के माध्यम से हम संपूर्ण विश्व की गतिविधियों से सीधा साक्षात्कार करने में समर्थ हो सकते हैं। यह आज के मनुष्य की जिज्ञासा को शांत करने का एक सशक्त माध्यम है। आज बड़े से बड़ा तथा सामान्य व्यक्ति पत्रकारिता के द्वारा अपनी भाषा की गरिमा बनाये हुए हैं।

प्रस्तावना

आज के युग में पत्रकारिता मानसिक तृप्ति का साधन बन गई है। विसंगतियों से परिपूर्ण जीवन को सही रुप में प्रस्तुत करने के लिए पत्रकारिता न केवल अमोध अस्त्र है, वरन् सशक्त माध्यम भी है। जीवन की विविधता और नित-नूतन साधनों की प्रचुरता ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। आज पत्रकार अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुरुप अपने लिए विशिष्ट क्षेत्रों का चयन कर रहे है।

खीचों ना कमानों को, ना तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अख़बार निकालो।।

सार रूप में कहें तो पत्रकारिता मानव मस्तिष्क को आलोकित करने वाली चैतन्य किरण है। पत्रकारों द्वारा जहाँ अपनी भाषा के उत्कर्ष का ध्यान रखा गया है, वही राष्ट्र में एकाएक उत्पन्न हो गयी, भाषा की समस्या का भी उन्मूलन किया गया।

राजाराम मोहनराय ने कहा है, हिन्दी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।

हिन्द द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है - दयानंद सरस्वती।

लाला लाजपत राय के अनुसार 'राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिये सारे देश में हिन्दी और नागरी का प्रचार आवश्यक है'

पत्रकारिता में भाषा की शुचिता, विचारों का गंभीर्य और शब्दों की सरसता, शैली का लालित्य कम न होने पाये, इसी से हम पत्रकारिता के शिखर का सरलतापूर्वक स्पर्श कर सकते हैं।

पत्रकारिता के विविध रूप

1.बाल पत्रकारिता : बालक देश के दर्पण होते हैं। वे राष्ट्र की मुस्कुराहट होते हैं। बालक मनोविज्ञान के मूल हैं। वे ही शिक्षक की प्रयोगशाला हैं। बालकों में वर्तमान करवटें लेता है और भविष्य के बीज उसी में बोये जाते हैं। बालकों के सम्यक् विकास के लिए बाल

पत्रकारिता अत्यंत उपयोगी है। बालसखा, शिशु बालक, चन्दामामा, गुडिया, बालभारती आदि।

2.धार्मिक पत्रकारिता : धर्म शब्द का अर्थ निरुक्ति के अनुसार नियम है। धृन्ज धारणे में मन प्रत्यय लगाने से धर्म बनता है। जिसका अर्थ है संसार को धारण करें, जिससे लोक का कल्याण हो और जिसे सभी धारण करें। व्यक्तिवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता के निम्न स्तरों से मानव-चेतना को ऊपर उठाकर विश्वत्मकता पर ले जाना ही धर्म का मर्म है। यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस सिद्धि स धर्मः1 इस संसार में अभ्युदय की कला मिलकर सफलतापूर्वक रहने की कला एवं परलोक प्राप्ति की कला सिखलाने वाला धर्म है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा है विज्ञान बिना धर्म के अंधा है और धर्म बिना विज्ञान लंगड़ा है2-

3.सांस्कृतिक पत्रकारिता : संस्कृति शब्द सम उपसर्ग के संस्कृति की (डु) कृ (त्र) धातु से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ- साफ या परिष्कृत शुद्ध करना है। एम. हेरा लेम्बस के मतानुसार, "संस्कृति के बिना मानव समाज का निर्णय संभव नहीं होता है।"3 दिनकर ने कहा - "संस्कृति सभ्यता की अपेक्षा महान चीज है। यह सभ्यता के भीतर उस तरह व्याप्त है, जैसे दूध में मक्खन या फूलों में सुगंध।"4 सांस्कृतिक पत्रकारिता के अंतर्गत नृत्य नाटक, गीत, वादन, कवि सम्मेलन आदि आते हैं।

4.फिल्म पत्रकारिता : फिल्म जगत युवा पीढ़ी के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है, फिल्म और फिल्मी हस्तियों के प्रति इस वर्ग की ललक और जिज्ञासा की पूर्ति के लिए ही फिल्म पत्रकारिता ने अपना अलग स्वरुप ले लिया है। फिल्म से संबंधित दर्जनों पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। कौन सी फिल्म आने वाली है, कौन-सी हिट होने वाली है, किसकी स्टोरी व डायलाग अच्छा है। किस फिल्म को आस्कर पुरस्कार मिला आदि। केदार शर्मा ने साठ के दशक में चित्रलेखा के लिए सुन्दर गीत लिखा, तुम जाओ, भगवान बने, इंसान बनो तो जाने।"5 प्रदीप को दूर हटो ऐ दुनिया वालों जैसे क्रांतिकारी गीत के लिए याद किया जाता है, ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में, भर लो पानी, जो शहीद हुए हैं, उनकी जरा याद करो कुर्बानी।। फणीश्वरनाथ रेणु, प्रेमचंद, मन्नू भण्डारी की कृतियों पर भी फिल्में बनी।

5. आर्थिक पत्रकारिता : एक कहावत है बिना अर्थ सब व्यर्थ6, अर्थ हर प्रकार के विकास में अनिवार्य भूमिका रखता है। शेयर बाजार, पूंजी बाजार, वस्तु बाजार से लेकर सरकारी बजट और उद्योग धंधों में अर्थ की महत्वपूर्ण जानकारी आर्थिक पत्रकारिता देती है। अर्थशास्त्र, वाणिज्य और तकनीकी ज्ञान से संपन्न छात्र को इस पत्रकारिता में विशेष सफलता की संभावनाये रहती हैं। इस दृष्टि से आर्थिक पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

6. खेल पत्रकारिता : आजकल सभी पत्रों में विविध खेलों से सम्बद्ध समाचार छपते हैं खेल के संबंध में अग्रिम और चल दो प्रकार के संवाद लिखे जाते हैं। शामिल होने वाली टीमें, खिलाड़ियों के नाम, क्रीड़ा व्यवस्था एवं खेल संवाद विशेष की पृष्ठभूमि के सहारे अग्रिम संवाद की रचना होती है। चल संवाद के द्वारा खेल का निष्पक्ष समीक्षात्मक विश्लेषण दिया जाता है। सुयोग खेल संवाद लेखक तथ्यों, टिप्पणियों, आलंकारिक

उक्तियों, मानवीय अभिरुचियों और प्रतियोगिताओं के पूर्व इतिहास की झांकी को आकर्षक शैली में प्रस्तुत कर अपने समाचार को प्रभावकारी बनाता है।7 खेल खिलाड़ी क्रिकेट सम्राट, स्पोर्टवीक आदि पत्रिकाओं ने खेल पत्रकारिता को आगे बढ़ाया। 7.

7 खोजी पत्रकारिता : आधुनिक पत्रकारिता जिस मुकाम पर पहुँच सकी है, वहाँ खोजी, पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान है। सत्य शिव् और सुंदर की स्थापना में खोजी पत्रकारिता जोखिम भरा काम है। सामान्य समाचार मानस पटल पर स्थायी छाप नहीं छोड़ते, लेकिन खोजी पत्रकारिता जब इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़कर उसे आम आदमी के सामने जीवित कर देती है तो तहलका मच जाता है, सत्ता के शिखर पर विराजमान शक्तिमानों का कलेजा कांप उठता है, संसद कई बार और कई दिनों तक ठप्प हो जाती है। सफेदपाशों का चेहरा बेनकाब हो जाता है और उनका छिपा कुकृत्य प्रकट होते ही कुर्सी छीन लेता है। यह सब संभव हो पाता है तो इसलिए कि इसमें साहसी कुशल और निष्पक्ष की वजह से। 8.

8 अपराध पत्रकारिता : वास्तव में समाज के व्यवहार में कुछ प्रतिमान होते हैं। हमारी सामाजिक रीति-रिवाज, परम्परायें धर्म और नैतिकता की भावनाएँ तथा इन सबसे अधिक मनुष्यता का आदि समाज में व्यवहार के प्रतिमान उपस्थित करते हैं। सामान्य रुप से समाज के सदस्यों को उन्हीं प्रतिमानों के अनुकूल कार्य करना पड़ता है और इसी में उनकी और समाज की भलाई थी, किन्तु जब वे इसके विपरीत आचरण करते है तब उसे नीति शास्त्र के अनुसार अनैतिक कार्य तथा धर्म शास्त्र में इसे पाप कहते हैं, कानून में अपराध। किसी भी देश अथवा समाज में व्यवस्था बनाये रखने और सुरक्षा प्रदान करने के लिये कुछ कानून अथवा नियम बनाये गये हैं। प्रोफेसर केनी के अनुसार "अपराध वह दोष है, जिसकी अनुशस्ति दण्ड है और यदि दण्ड क्षमा हो भी सके तो केवल सरकार द्वारा हो सकता है"।8

निष्कर्ष

अतः हम निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि पत्रकारिता ने न सिर्फ हिन्दी भाषा के परिष्कार में सहयोग किया, अपितु मानव जगत को बौद्धिक व वैचारिक धरातल भी प्रदान किया है। पत्रकारिता ने समाज को नई दिशा में लाकर खड़ा किया, इसके माध्यम से समाज को सुरक्षा मिली तथा पत्रकारिता भाषा के साथ न्याय करने में भी सफल दिखाई दे रही है। हिन्दी भाषा की गरिमा को बढ़ाने में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ

1.हिन्दी पत्रकारिता और भावात्मक एकता, डॉ.अर्जुन तिवारी, पृ. 56
2.हिन्दी पत्रकारिता और भावात्मक एकता, डॉ.अर्जुन तिवारी, पृ.56
3.संस्कृति के चार अध्याय प्रथम संस्करण, रामधारी सिंह दिनकर, पृ. 652
4.सामाजिक शोध पत्रिका, अंक 07
5.सिनेमा और साहित्य
6.फिल्मी गीतों में साहित्य, डॉ.शोभा चतुर्वेदी, पृ. 229
7.हिन्दी पत्रकारिता रीति-नीति और वृत्ति - जितेन्द्र वत्स, पृ. 10
8. प्रमाणिक प्रयोजन मूल के हिन्दी, पृथ्वी नाथ पाण्डेय, पृ. 217